GRT
Golden Research Thoughts
ISSN: 2231-5063 Impact Factor : 4.6052(UIF) Volume - 6 | Issue - 6 | December - 2016

अन्य लोक साहित्य – (लोकोक्तियॉं, मुहावरे, पहेलियॉं आदि)

प्रा.डॉ.सौ.फैमिदा शब्बीर बिजापूरे
हिंदी विभागाध्यक्ष , क.भा. पा. महाविद्यालय, पंढरपूर.

कहावते

कहावते ऐसा बॅधा –बॅधाया चमत्कृतिपूर्ण वाक्य है। जिसमें किसी तत्व को बात संक्षेपमें कहीं जाती है। कहावत को लोकोक्ति भी कहते है।

लोकोक्ति का अर्थ है लोक या समाज में प्रचलित उक्ति। इसी को कहावत कहते हैं। अंग्रेजी में इसे Proverb 'प्रावर्ब' कहते हैं। विभिन्न विद्वानों ने लोकोक्ति की परिभाशा भिन्न–भिन्न शब्दों में की है। बेकन के अनुसार, भाषा के वे तीव्र प्रयोग, जो व्यापार और व्यवहार की गुत्थियों को काटकर तह तक पहुॅच जाते हैं, लोकोक्ति कहलाते है। डॉ. जॉनसन कहते हैं कि वे संक्षिप्त वाक्य जिनको लोग प्रायः दोहराया करते हैं, लोकोक्ति कहलाते हैं। इरैस्मस का कथन है कि वे लोकप्रसिध्द और लोकप्रचलित उक्तियां, जिनकी एक विलक्ष ढंग से रचना हुई हो, कहावत कहलाती हैं।

लोकोक्तियों तथा मुहावरों दोनों में बहुधा लक्षण तथा व्यंजना का प्रयोग

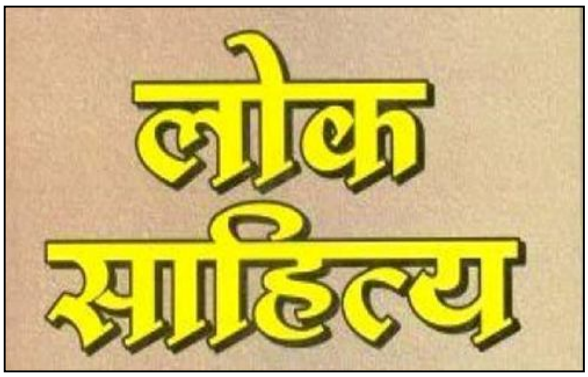

होता है। दोनों में अभिधेयार्थ गौण और लक्ष्यार्थ तथा व्यंग्यार्थ प्रधान होते हैं। मुहावरों के प्रयोग वाक्यों तथा लोकोक्तियॉं दोनों में चमत्कार, अभिव्यंजन वि"िष्टता तथा प्रभाविता होती है। फिर भी लोकोक्तियों का प्रयोग प्रायः किसी बात के समर्थन खंडन अथवा पुष्टिकरण के लिए होता है। लोकोक्तियों और मुहावरों दोनों में अलंकार होते हैं। लोकोक्तियों में वि"ोष रूप से 'लोकोक्ति' अलंकार होता है। इस प्रकार प्रायः सभी लोकोक्तियां उसके अंतर्गत आ जाती है जैसे 'इहां कोहड बतिया कोड नाहीं', 'एक जो होय तो ज्ञान सिखाइए', 'कूप ही में यहां भांग परी हैं', 'जिसकी लाठी उसकी भैंस', आदि । किंतु मुहावरे किसी एक अलंकार में सीमित नहीं होते। उनमें अनेक अलंकार दृष्टिगोचर होते हैं, जैसे उपमा, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, आदि । किन्तु मुहावरों में अलंकार का पाया जाना अनिवार्य नहीं हैं।

लोकोक्तियॉं या कहावते

1. अंधा क्या चाहे दो ऑखें – इच्छित बात हो जाना ।
2. अंधे के आगे रोये अपने नैना खोये – अयोग्य से कहना ।
3. अंधों में काना राजा – गुणहीनों में थोडा गुणी सम्मानित ।
4. अंधे के हाथ बटेर – मात्र संयोग से सफल होना ।
5. अकेला चना भाड नहीं फोड सकता – अकेला आदमी कुछ नहीं कर पाता।
6. अधजल गगरी छलकत जाय – ओछा आदमी इतराता है।
7. अपनी करनी पार उतरनी – अपने किये का फल।
8. ऑख का अंधा गॉठ का पूरा – मूर्ख धनी।
9. आगे कुऑ पीछे खाई – दोनों ओर मुसीबत।

आदि

पहेलियॉं

किसी वस्तु अथवा विषय का ऐसा गुढ वर्णन जिसके आधारपर उत्तर देने या उस वस्तु का नाम बतानेनें बहुत सोच विचार करना पडे।

ऐसी जठील बात जब घुमाव फिराव की बात जल्दी किसी के समझ मे न आना ।

कोई बात घुमा फिराकर कहना की जल्दी किसीके समझमे न आना।

1. सेने की वह चीज हैं, पर बेचे नहीं सुनार। मोल तो ज्यादा हैं नहीं, बहुत है उसका भार। – (चारपाई)

नहीं मैं मिलती बाग में, आधी फल हूॅ, आधी फूल। काली हूॅ पर मीठी हूॅ, खा के न पाया कोई भूल। – (आम)
2. सोने को पलंग नहीं, न ही महल बनाए, एक रूपया पास नहीं, फिर भी राजा कहलाए। (गुलाबजामन)
3. एक थला मोती से भरा सब के सिर पर औंधा धरा चारो ओर वह थाली फिरे मोती उससे एक ना गिरे। – (आका''ा)
4. न मारा ना खून किया । मेरा सर क्यों काट लिया । – (नाखून)
5. तुम न बुलाओ मैं आ जाऊॅगी, न भाडा न किराया दूॅगी, घर के हर कमरे में रहूॅगी, पकड न मुझको तुम पाओगे, मेरे बिन तुम न रह पाओगे, बताओ मैं कौन हूॅ? – (हवा)
6. गर्मी में तुम मुझको खाते, मुझको पीना हरदम चाहते, मुझसे प्यार बहुत करते हो, पर भाप बनूॅ तो डरते भी हो। – (पानी)। आदि

मुहावरें

साहित्य में एक अलंकार उस समय माना जाता है जब मुहावरें के प्रयोग से साहित्य में अधिक रोचकता आती है। मुहावरें साहित्य का गहना है। लोग में समान रूप से प्रचलित बात को मुहावरों द्वारा स्पष्ट किया जाता है। किसी की बात को घुमा फिराकर प्रस्तुत करना मुहावरा हैं। लोकोक्तियॉ और मुहावरों दोनो में अलंकार होते है। किन्तु मुहावरें किसी एक अलंकार में सीमित नहीं होते।

लोकोक्ति में उद्देश्य और विधेय रहता है। उनका अर्थ समझने के लिए किसी अन्य साधन की आवश्यकता नहीं होती। यह सच है कि कुछ लोकोक्तियॉ में कभी–कभी क्रियापद लुप्त होता है, परंतु उसको समझने के लिए किसी प्रकार की विशेष कठिनाई नहीं होती। परंतु मुहावरों में उद्देश्य और विधेय का विधान नहीं होता । इस कारण जब तक उनका प्रयोग वाक्यों में नहीं किया जाता, तब तक उनका सम्यक् अर्थ समझ में नहीं आता।

1. अंग – अंग ढीला होना – बहुत थक जाना।
2. अॅगूठा दिखाना – देने से इन्कार कर देना।
3. अॅधेरे घर का उजाला – एक मात्र पुत्र।
4. अड्डा जमाना – जमकर रह जाना।
5. अपना उल्लू सीधा करना – स्वार्थ सिध्द करना।
6. अपने मुॅह मियॉ मिट्ठू बनना – अपनी बढाई अपने आप करना।
7. ऑख मारना – इशारा करना।
8. ऑखे चार होना – भेट होना, प्रेम करने लगना।
9. ऑखे चुराना – सामने न आना।
10. ऑखे दिखाना – डराना, धमाकना।
11. ऑखो में धूल डालना – धोखा देना।
12. ऑसू पोंछना – धीरज दिलाना।
13. आकाश पाताल का अन्तर होना – बहुत अधिक अंतर होना।
14. आटे दाल का भाव मालूम होना – कठीनाईयों का सामना करना।
15. आडे हाथों लेना – बुरा भला कहना।
16. आपे से बाहर होना – बहुत गुस्सा करना।
17. इधर–उधर की हॉकना – बेकार की बातें करना।
18. ईद का चॉद होना – बहुत दिनों बाद देना।
19. ऊॅगली उठाना – दोष निकालना।
20. उल्टी गंगा बहाना – विरोधी बात करना।
21. एडी चोटी का जोर लगाना – कठोर परिश्रम करना।
22. ऑधी खोपडी होना – मूर्ख होना।
23. कलेजा ठंडा होना – संतोष होना।
24. कागजी घोडे दौडना – केवल कागजी कारवाई करते रहना।

25. काठ का उल्लू – बिलकूल मूर्ख।
26. कुत्ते की मौत मरना – बुरी हालत में मरना।
27. कोल्हू का बैल – बहुत परिश्रमी व्यक्ति।
28. खटाई में पडना – मामला उलझ जाना।
29. खाक छानना – बेकार घुमना।
30. गडे मुरदे उखाडना – बीती बातों की याद दिलाना।

संदर्भ –

1. युग और प्रवृत्तियॉ – आचार्य शुक्ल.
2. द्वितीय भाषा हिंदी – श्री. म. जोशी.
3. हिंदी साहित्य का इतिहास – शिवकुमार शर्मा.
4. इंटरनेट माध्यम – Google.com
5. अमोद खूसरों की पहेलियॉ ।
6. साहित्य सौरभ – संपादक मंडल, सोलापूर विश्वविद्यालय सोलापूर.
7. हिंदी साहित्य – युग और प्रवृत्तियॉ – डॉ. शिवकुमार शर्मा
8. विश्व हिंदी कोष ।